International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 6, Issue 01, Jan 2019
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

सरस्वती नदी घाटी (जिला श्रीगंगानगर) का पुरातात्विक अध्ययन

कुलदीप
सहायक प्राध्यापक, इतिहास
राजकीय स्नातकोत्तर नेहरु महाविद्यालय,झज्जर
ई–मेल. **Kuldeep3182@gmail.com**

शोध सार

नदियां जल की प्राकृतिक उपलब्धता का मुख्य स्रोत है। विश्व की अनेक नदियां वर्ष भर जल की उपलब्धता तथा उपजाऊ जलोढ़ मृदा के निक्षेपों के कारण मानव सभ्यताओं के विकास हेतु आदर्श परिस्थितियों का निर्माण करती हैं। इसी कारण विश्व की अनेक प्राचीन सभ्यताएं नदी घाटियों में ही विकसित हुई। वर्तमान शोध–पत्र में राजस्थान जिले के सुदूर उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में स्थित वर्तमान श्रीगंगानगर जिले में प्रवाहित होने वाली भारतीय इतिहास की जीवंत किवदंती बन चुकी सरस्वती नदी घाटी क्षेत्र में पुरातात्विक स्थलों का सर्वेक्षण कर, इस क्षेत्र में विकसित हुई सभ्यताओं के क्रमबद्ध विकास की जानकारी दी गई है, जो भारतीय इतिहास के निर्माण में सरस्वती नदी–तंत्र की भूमिका को रेखांकित करती है।

कूट शब्द– सरस्वती, आद्य–ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक, चित्रित धूसर मृदभांड, अंगुत्तरनिकाय, साहित्यिक।

इतिहास वस्तुतः मानव जीवन के सामाजिक विकास की प्रक्रिया का क्रमबद्ध अध्ययन है। इसका उद्देश्य केवल महत्त्वपूर्ण घटनाओं का लेखा–जोखा देना ही नहीं है,बल्कि मानव समाज के सभी पक्षों (आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक,राजनीतिक) का तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत करना भी होता है। इतिहास लेखन की प्रक्रिया मनुष्य के अतीत से संबंधित विभिन्न स्त्रोतों के माध्यम से संचालित होती है। प्रायः साहित्यिक स्त्रोतों की रचना किसी व्यक्ति विशेष अथवा घटना को केंद्र बिंदु बनाकर की जाती है, जिसके कारण ये स्रोत मानव इतिहास के सभी पक्षों की जानकारी प्रदान नहीं कर पाते हैं। इससे इतिहास लेखन में साहित्यिक स्रोतों के प्रमाणीकरण एवं मानव जीवन के अन्य पहलुओं के ऐतिहासिक ज्ञान हेतु पुरातात्त्विक स्रोतो ंपर निर्भरता बढ़ जाती है। अतः शोध पत्र में राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले की पदमपुर, विजयनगर, व अनूपगढ़ तहसीलों का पुरातात्त्विक अध्ययन (प्रारंभिक काल से 1200 ईस्वी तक) गाँव–गाँव सर्वेक्षण विधि माध्यम से विभिन्न पुरास्थलो ंका सर्वेक्षण किया गया है। पिछली शताब्दी के दौरान पुरातत्त्व विषय के अंतर्गत किए गए अध्ययनों में बहुआयामी दृष्टिकोण का प्रतिपादन हुआ है। वर्तमान समय में पुरातत्त्व का उद्देश्य केवल प्राचीनकाल के कलात्मक अवशेषों का संग्रह–मात्र नहीं है, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे वातावरण, खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज, आर्थिक–राजनीतिक स्थिति आदि का अध्ययन करते हुए मानव–समाज के समग्र इतिहास को प्रस्तुत करना है।वर्तमान समय में पर्यावरण में निरंतर बढ़ते मानवीय हस्तक्षेप का प्रभाव पुरातत्त्व के अध्ययन क्षेत्र पर भी पड़ा है। विभिन्न पुरास्थल भी मानवीय गतिविधियों के कारण नष्ट होते जा रहे हैं। इस

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

संदर्भ में क्षेत्रीय स्तर पर पुरातात्त्विक अध्ययनों द्वारा पुरास्थलों का प्रलेखीकरण अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से वर्तमान शोध पत्र द्वारा शीर्षकांकित क्षेत्र का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण करते हुए पुरास्थलों को चिन्हित किया गया है। शोध कार्य के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र के पुरास्थलों को जी.पी.एस. द्वारा अक्षांशीय व देशांतरीय आधार पर चिह्नित करते हुए, छायाचित्रों के माध्यम से विभिन्न पुरास्थलों की वर्तमान दशा व प्राप्त पुरावशेषों के माध्यम से सांस्कृतिक महत्त्व को प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ–साथ सर्वेक्षण से एकत्रित पुरासामग्री का पूर्ववर्ती शोध–कार्यों व अन्य साहित्यिक स्रोतों से तुलनात्मक अध्ययन करते हुए इस क्षेत्र की आद्य–ऐतिहासिक, ऐतिहासिक व पूव मध्यकाल तक का ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

शोध विषय का चयन

मानव जीवन की उत्पत्ति एवं विकास में नदियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विश्व की अनेक प्राचीन सभ्यताएँ विभिन्न नदी–घाटियों के उर्वर परिवेश में पुष्पित–पल्लवित हुई हैं। किसी नदी अथवा विभिन्न जलधाराओं द्वारा निर्मित जलप्रवाह के तंत्र को अपवाह तंत्र कहते हैं। साहित्यिक स्रोतों के अनुसार इस क्षेत्र में सरस्वती व दृष्द्वती नदियाँ बहती थीं। विद्वानों में सरस्वती नदी के उद्गम एवं प्रवाह मार्ग को लेकर विभिन्न अवधारणाएं व्याप्त है परंतु अधिका"ातः इस मत स सहमत हैं कि श्रीगंगानगर जिले में सूरतगढ़ तहसील में सरस्वती–दृष्द्वती (आधुनिक घग्गर) नदी से मिल जाती थी और विजयनगर व अनूपगढ तहसीलों से बहते हुए, पाकिस्तान के बहावलपुर जिले में प्रवेश कर जाती है। यद्यपि साहित्यिक स्रोतों में सरस्वती नदी का वर्णन एक विशाल नदी के रूप में किया गया है, परन्तु वर्तमान समय में यह एक बरसाती नदी के रूप में विद्यमान है। इसमें केवल मानसून के समय ही जल की उपलब्धता होती है अन्यथा वर्ष के अधिकांश समय यह सूखी रहती है। इस क्षेत्र में सरस्वती नदी के प्रवाह–क्षेत्र को रेत के टीलों के बीच से गुजरती हुई जलोढ़ मृदा की एक संकरी पट्टी द्वारा चिन्हित किया जा सकता है। अनूपगढ़ के निकट ही दो अन्य बरसाती नदियाँ वल्लूर व नरवाल भी सरस्वती में मिलती थीं। संभवतः पानी के सूखने व कृषि सम्बन्धी गतिविधियों के कारण इन नदियों के प्रवाह–मार्ग का अस्तित्व भी समाप्त हो गया

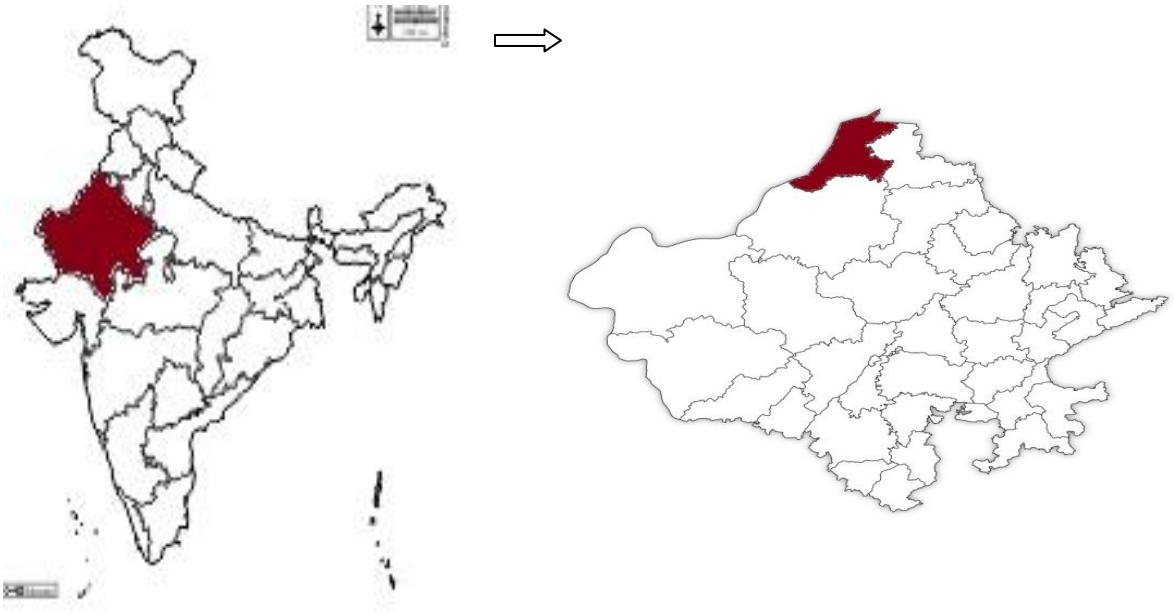

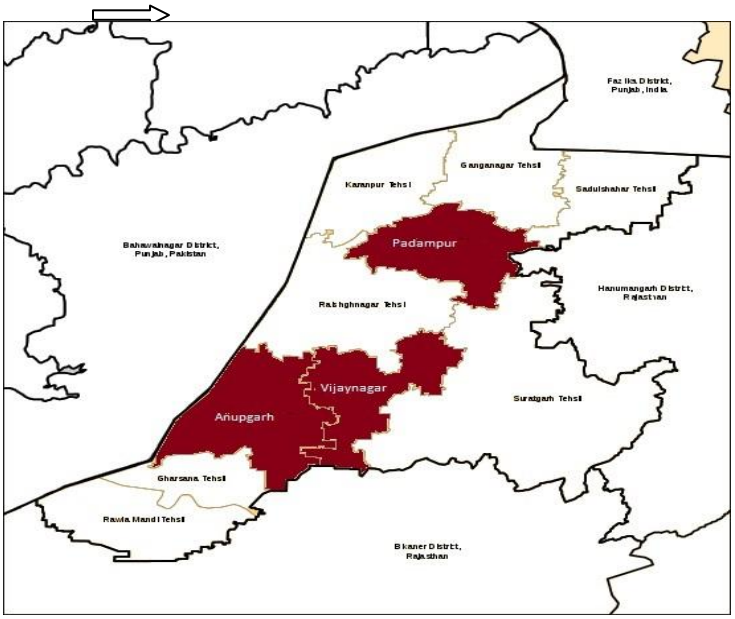

तथा नरवाल नदी के प्रवाह–मार्ग का स्थान इंदिरा गांधी नहर परियोजना ने ले लिया है। पाकिस्तान में प्रवेश करने के बाद इसे घग्गर, सोत्रा, हाकड़ा, वैहिंदी इत्यादि नामों से जाना जाता है।[2] भिन्न–भिन्न विद्वानों के मतानुसार अंतिम हिमयुग के उपरांत बदलती जलवायविक परिस्थितियों के कारण इन नदी द्रोणियों में जल की उपलब्धता निरंतर घटती चली गई और संभवतः तेरहवीं शताब्दी ई॰ तक लगभग सूख गई।

ऐतिहासिक रूप से राजस्थान का क्षेत्र विभिन्न प्राचीन संस्कृतियों की जन्मस्थली रहा है। अनेक विद्वानों द्वारा किए गए शोध कार्यों द्वारा राजपूताना क्षेत्र की समृद्ध ऐतिहासिक विरासत के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। इन अध्ययनों से पता चलता है, कि प्रागैतिहासिक काल से ही यह क्षेत्र मानवीय गतिविधियों का केंद्र रहा है तथा पुरापाषाण काल के प्रारंभिक चरण सेलेकर आधुनिक संस्कृतियों के उद्‌भव तक इस क्षेत्र से मानवीय उद्विकास के प्रचुर साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। वर्तमान शोध कार्य से पूर्व किए गए शोध कार्यों से इस क्षेत्र की पुरातात्त्विक संभावनाओं का पता चल सका, जिसके कारण पूर्ववर्ती पुरातत्वेत्ताओं ने इस क्षेत्र में कुछ पुरास्थलों का उत्खनन के लिए चयन किया। अतः क्षेत्र की पुरातात्त्विक संभावनाओं से प्रभावित होकर शोधकर्ता ने इस क्षेत्र को शोध के विषय के रूप में चयन किया और गाँव–गाँव घूमकर जिले को 3 तहसीलों पदमपुर,विजयनगर और अनूपगढ़ का सर्वेक्षण करने का निश्चय किया।

आद्य ऐतिहासिक काल (Protohistoric Period)

प्रस्तुत लघु शोध–ग्रंथ के अंतर्गत सम्मिलित अध्ययन क्षेत्र का इतिहास आद्य ऐतिहासिक संस्कृतियों से प्रारंभ होता है।संभवतः विषम रेतीली मरुभूमि व अरावली पर्वत श्रृंखला से दूरी के कारण इस क्षेत्र में प्रागैतिहासिक कालीन मानव केआवास की उपयुक्त परिस्थितियां विद्यमान नहीं थी । अतः इसी कारण इस क्षेत्र से प्रागैतिहासिक संस्कृतियों के प्रमाण प्राप्तनहीं हुए हैं।इस क्षेत्र में मानवीय सभ्यता का आगमन संभवतः नवपाषाण काल के प"चात् विकसित होने वाले कृषक ग्रामीण समुदायों के द्वारा लगभग तृतीय सहस्त्राब्दी ईस्वी पूर्व के आसपास हुआ, जिसकी पुष्टि अध्ययन क्षेत्र तथा निकटवर्ती क्षेत्रों में किए गए पूर्ववर्ती शोध कार्यों द्वारा होती है। अनूपगढ़ तहसील में स्थित दो पुरास्थलों बारोर और 4 एम.एस. आर. (बिंजोर) केउत्खनन से प्रतिवेदित प्रमाणों से ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र में मानव सभ्यता का प्रथम चरण प्राक् हड़प्पा (Pre Harappan) संस्कृतियों के आगमन से प्रारंभ होता है। इस संस्कृति के अस्तित्व को हाकऱा संस्कृति के मृदभांडो की उपस्थिति द्वारा चिह्नित किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में बारोर के सांस्कृतिक काल–1[1] तथा 4एम.एस.आर. (बिंजोर)[2] पुरास्थल के उत्खनन के प्रारंभिक चरण से इन संस्कृतियों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान बारोर (63 जी.बी.) से भी इस काल के मृदभांड पाए गए हैं।

आरंभिक हड़प्पा काल (Early Harappan Period)

विवेच्य क्षेत्र में प्राक् हड़प्पा संस्कृतियों के बाद आरंभिक हड़प्पाकालीन संस्कृतियां फली–फूलीं । वर्तमान सर्वेक्षण के अंतर्गत16 पुरास्थलों से इस संस्कृति के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। वर्तमान हनुमानगढ़ तहसील में स्थित कालीबंगा,[3] सोथी[4], डाबड़ी[5], व डबलीवास चकता[6] एवं श्रीगंगानगर जिले के बारोर [7] व 4 एम.एस.आर. (बिंजोर)[8] पुरास्थला के उत्खनन से आरंभिक हड़प्पा कालीन संस्कृतियों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। इन उत्खननों से उत्तर–पश्चिमी राजस्थान क्षेत्र में हड़प्पा सभ्यता के आरंभिक चरण के विभिन्न पक्षों के विषय मे महत्त्वंपूर्ण जानकारियां प्रकाश में आई हैं। कालीबंगा उत्खनन के दौरान प्रथम व द्वितीय स्तर से आरंभिक हड़प्पा संस्कृति के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। इन स्तरों से धूप से पकी कच्ची ईंटों के भवन प्रकाश में आए हैं, इन ईंटों के माप का अनुपात 1: 2 : 3 (10×20×30 से.मी.) पाया गया है।[9] यद्यपि बारोर के उत्खनन से प्राप्त आरंभिक हड़प्पाकालीन ईटों का माप 50×20–25× 8–10 से.मी. है, जो पारंपरिक आरंभिक हड़प्पाकालीन अनुपात से मेल नहीं खाता है।[10] बारोर में कालीबंगा की तुलना में कम ईंटों का प्रयोग किया गया है। इन स्तरों से स्तंभ गर्तों को प्राप्ति संभवतः इस क्षेत्र के निवासियों द्वारा झोपड़ियों में निवास करने के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त इस स्थल से जल उपलब्धता हेतु नदी की धारा को काटकर एक नहर बनाने के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं।[11] 4एम.एस.आर. तथा बारोर से प्राप्त मृदभांडों की बनावट, चित्रण व अन्य अलंकरण अभिप्राय तत्कालीन निवासियों की मृद्भांड निर्माण की दक्षता के परिचायक हैं। मृद्भांडों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के मनके चूड़ियां, मृणमूर्तियां,तांबे के बने अनेक उपकरण प्राप्त हुए हैं । 4एम.एस.आर.(बिंजोर) से प्राप्त स्टेटाइट की मुहरें, जिन पर कवल ज्यामीतीय अलंकरण निरूपित हैं, आरंभिक हड़प्पाकालीन चरण से प्राप्त विशिष्ट पुरावशेष हैं।[12] कालीबंगा के आरंभिक हड़प्पाकालीन स्तर से प्राप्त एक जुते हुए खेत के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस खेत से प्राप्त कूड़ों का आकार वर्तमान समय में राजस्थान क्षेत्र के फसल बोने क तरीके से मेल खाता है, जो इस क्षेत्र के अनवरत सांस्कृतिक प्रवाह का ज्वलंत प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।[13] अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत अनूपगढ़ तहसील में स्थित 68/2जी.बी. नामक पुरास्थल के उत्खनन से मानव कंकाल की प्राप्ति इस क्षेत्र की आरंभिक हड़प्पा कालीन संस्कृति के धार्मिक–सामाजिक रीति–रिवाज पर भी प्रकाश डालती है।[14]

विकसित हड़प्पा काल(Mature Harappan Period)

विकसित हड़प्पाकालीन मृद्भांड

आरंभिक हड़प्पा काल के उपरांत इस क्षेत्र में विकसित हड़प्पा संस्कृति अस्तित्व में आई। यह चरण हड़प्पा सभ्यता के विकसित नगरीय एवम् व्यवस्थित नगरों के विन्यास,लिपि,लंबी दूरी के व्यापार– वाणिज्य, भार–माप के मानकीकृत पैमाने आदि महत्वपूर्ण तत्वों के द्वारा चिह्नित किया जाता है। यद्यपि अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत बारोर व 4एम.एस.आर. (बिंजोर) सर्वाधिक विस्तृत पैमाने पर उत्खनित पुरास्थल हैं,परंतु इन पुरास्थलों पुरातात्विक रिपोर्टों के प्रकाशित न हाने के कारण,इनके ऐतिहासिक महत्त्व की जानकारी के लिए केवल समय पर प्रकाशित शोध लेखों द्वारा उपलब्ध जानकारी पर ही निर्भर रहना पड़ता है। उत्खननों के परिणामों के आधार पर इस क्षेत्र में हड़प्पा सभ्यता के विकसित चरण का काल निर्धारण लगभग 2600 ईसवी पूर्व से 1900 ईसवी पूर्व तक निर्धारित कियागया है।[14] अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत उत्खनित तरखानवाला डेरा (78 जीबी) पुरास्थल से विकसित हड़प्पा संस्कृतिके विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। उत्खनन के दौरान 28×14×7,32×16×8 के मानकीकृत अनुपात 1: 2 : 4 में कीधूप में पकी हुई कच्ची ईंटों की भवन संरचनाएं प्रकाश में आई हैं।[16] वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान बारोर से प्राप्त पकी ईंटें और 1 जी.बी. (जैतसर) से प्राप्त पकी ईंटों से निर्मित कुएं की प्राप्ति इस काल में पकी हुई ईटों के प्रयोग के साक्ष्य भी प्रस्तुत करती हैं। वर्ष 2015–17 सत्रों के दौरान पुरास्थल 4एम.एस.आर. (बिंजोर) से विशेषतः काल के दौरान अध्ययन क्षेत्र की उत्कृष्ट धातु प्रौद्योगिकी के विषय में जानकारी प्रदान करती है ।[17] इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र से प्राप्त विभिन्न मुहरें संभवतः इस क्षेत्र के व्यापारिक महत्व की परिचायक हैं। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान 23 जी. बी.पुरास्थल से भी एक स्टेटाइट की हड़प्पा लिपि युक्त मुहर प्राप्त हुई है, जिसका विवरण अध्याय 'सांस्कृतिक सामग्री के अध्ययन' में दिया गया है।

उत्तर हड़प्पा काल (Late Harappan Period)

विकसित हड़प्पा काल के प"चात् इस क्षेत्र में उत्तर हड़प्पा संस्कृति के प्रमाण प्राप्त हुएहैं । इस संस्कृति से संबंधित दो पुरास्थल क्रमशः 9 जी.एम. (गोमावाली), विजयनगर तहसील से तथा 2 पी.एस. (पदमपुर तहसील)से प्रका"ा में आए हैं। वर्तमान सर्वेक्षण से पूर्व, अध्ययन क्षेत्र में उत्तर हड़प्पा संस्कृति के प्रमाण प्रतिवेदित नहीं हुए थे। हाल ही में,इसकी निकटवर्ती तहसील सूरतगढ़ से इस संस्कृति के प्रमाण अवश्य पाए गए हैं।[18] इस काल से संबंधित पुरासामग्री मेंकेवल मृद्भांडों के ठीकरों की प्राप्ति हुई है, जिनकी दशा व बनावट निम्न स्तरीय है। अतः इनसे इस क्षेत्र की उत्तर हड़प्पा संस्कृति के अन्य

पहलुओं के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती। यद्यपि इन पुरास्थलों की खोज, इस क्षेत्र में हड़प्पा संस्कृति और उसकी अनुवर्ती ऐतिहासिक संस्कृतियों के मध्य अंतर को पाटने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति (Painted Grey Ware Period)

वैदिक काल में इस क्षेत्र से दृषद्वती व सरस्वती नदियां बहती थीं। इन नदियों की उर्वर घाटियों को वैदिक आर्यों नेसंभवतः अपने आवास स्थल हेतु चुना, तथा इस क्षेत्र को वैदिक स्त्रोतों में ब्रह्मवर्त क्षेत्र के नाम से जाना गया है। अध्ययनक्षेत्र में चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति हड़प्पाई संस्कृतियों की अनुवर्ती पाई गई है। वर्तमान सर्वेक्षण के अंतर्गत 10पुरास्थलों से इस संस्कृति के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। वर्ष 2003–04 के दौरान वर्तमान अनूपगढ़ तहसील में स्थित चक 86 पुरास्थल के उत्खनन से इस क्षेत्र की चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृतियों के विषय में विस्तृत जानकारी प्रकाश में आई है। उत्खनन के दौरान इस पुरास्थल से 6 गोलाकार झोपड़ियों की निर्माण योजना के प्रमाण प्राप्त हुए हैं, इन झोपड़ियों कीगोलकार परिधि के किनारों के निकट प्राप्त स्तंभ गर्तों से प्रतीत होता है कि इस सभ्यता के निवासी घास–फूस से बनी झोपड़ियों में रहते थे। इसके अतिरिक्त धूप में सूखाई गई कुछ कच्ची ईंटों के अनियमित ढांचे भी प्राप्त हुए हैं।चित्रित धूसर मृदभांडों की पतली व सुदृढ़ गढन के हैं, जो तेज गति के चाक पर बने इन पात्रों कीधूसर सतह पर काले रंग से रेखीय व ज्यमितीय चित्रण इस संस्कृति को मुख्य विशेषता है। इसके अतिरिक्त चित्रित धूसर मृद्भांड परंपरा के साथ अन्य समवर्ती पात्र परंपराएं जिनमें कृष्ण लोहित पात्र परंपरा ,चटाई छाप लाल मृद्भांड परंपरा व धूसर पात्र परंपरा के प्रमाण भी प्राप्त हुए हैं। जबकि संस्कृति अन्य पुरावशेषों में पशु मृणमूर्तियां, पकी मिट्टी के पहिए,शंख, पकी मिट्टी व अन्य कीमती पत्थरों के मनके, सिलबट्टे ,शंख व फियांस की चूड़ियां इत्यादि प्राप्त हुए हैं।[19]

आरंभिक ऐतिहासिक काल (Early Historical Period)

वैदिक काल के उपरांत भारतीय इतिहास में महाजनपद युग प्रारंभ होता है,जिसके अंतर्गत वैदिककालीन जन विकसित होकर राजतांत्रिक व गणतांत्रिक प्रवृत्ति के महाजनपदों के रूप में विकसित हो जाते हैं। महाजनपद युग महाभारत काल के दौरान यह क्षेत्र संभवतः *'कुरु जांगल'* के नाम से जाना जाता था।[20] डॉ जी. एच. ओझा जंगल देश क्षेत्र को कुरु व मद्र जनपदों के दक्षिणी की ओर स्थित बताते हैं ।[21] मध्यकालीन स्त्रोतों में भी बीकानेर क्षेत्र को जांगलदेश व इसके शासकों को जांगल धार बादशाह कहा गयाहै।[22] अतः नामकरण की साम्यता के आधार पर यह प्राचीन अवधारणाउचित प्रतीत होती है। बौद्ध ग्रंथ *अंगुत्तरनिकाय* में इस प्रकार के सोलह महाजनपदों को सूची मिलती है।[23] महाजनपद युग में मध्य गंगा की घाटी में लगभग छठी शताब्दी ईस्वी पूर्व में मगध जनपद का उत्कर्ष हुआ। इस काल के दौरान उत्तर–पश्चिमी भारतीय उपमहाद्वीप में राजनीतिक एकता का अभाव था। प्रारंभिक विदेशी आक्रमणों के कारण छोटे–छोटे राज्यों का अस्तित्व था। इस समय पश्चिमी उत्तरप्रदेश से बहावलपुर तक शक्तिशाली यौधेयगण का शासन था। पाणिनी (चतुर्थ सदी ईस्वी पूर्व) इन्हें *आयुधजीवीसंघ* कहकर संबोधित करते हैं।[24] वर्तमान जिला गंगानगर व बहावलपुर क्षेत्र के निकटवर्ती क्षेत्रों के जोहिया राजपूत स्वयं को यौधेयों का वंशज मानते हैं तथा इनके क्षेत्र को जोहियाबार कहा जाता है।[23] इसके अतिरिक्त इस काल के दौरान यह क्षेत्र आभीरों के प्रभाव में भी रहा है।[25] यद्यपि क्षेत्र के निकटवर्ती इलाकों से आहत सिक्कों की प्राप्ति प्राक् मौर्यकाल के दौरान विभिन्न संस्कृतियों के अस्तित्व का प्रमाण अवश्य देती है, परंतु इनसे किसी व्यक्ति विशेष अथवा वंश के आधिपत्य के विषय में जानकारी नहीं मिलती ह

मौर्य काल (Mauryan Period) वर्तमान उत्तर–पश्चिम भारत में बैराट,[27] हिसार[28] और टोपरा[29] से प्राप्त सम्राट अशोक के अभिलेखों से इस क्षेत्र पर मौर्य शासकोंद्वारा शासन किए जाने के प्रमाण प्राप्त होते हैं। जयपुर के निकट भाब्रू से प्राप्त अशोक के लघु शिलालेख से भी राजस्थान क्षेत्र पर मौर्यों द्वारा शासन किए जाने की पुष्टि होती है।[30] परंतु अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया तथा उत्तर पश्चिमी भारत मे पुनः विदेशी शक्तियों का आगमन हुआ इस क्रम में हिंद यवन शासक व पहलवों की सत्ता स्थापित हुई। इन विदेशी शक्तियों का प्रभाव संभवतः वर्तमान अध्ययन क्षेत्र पर भी पड़ा होगा। पतंजलि के *महाभाष्य* में हिंद –यवनं शासकों द्वारा माध्यमिका (वर्तमान नागरिका चित्तौड़) पर आक्रमण किए जाने का वर्णन करता है।[31] हनुमानगढ़ जिले की नोहड़ तहसील से देवेंद्र हांडा द्वारा अपोलोडोट्स के छह तांबे के सिक्के प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र में हिंद–यवनशासकों के आधिपत्य के सूचक है।[32] इसी क्रम में पांडुसर से प्रतिवेदित गोंडोफर्निस का एक सिक्का इस क्षेत्र में पह्लव शासकों की उपस्थिति का घोतक है।[33] सुदूर उत्तर पश्चिम में बैक्ट्रिया क्षेत्र में स्थित हिंद–यवन शासकों की सत्ता ,मध्य एशियासे आए कुषाणों के बढ़ते प्रभुत्व के कारण कमजोर पड़ गई। जिसके बाद इस क्षेत्र में कुछ स्थानीय राज्यों का उदय हुआ। नोहर से प्राप्त क्षुद्रक जन के सिक्के प्रमाणित करते हैं कि संभवत द्वितीय शताब्दी ईस्वी पूर्व के दौरान राजस्थान के उत्तरी–पश्चिमी भाग पर क्षुद्रक जन का आधिपत्य था।[34] साहित्यिक स्रोतों के अनुसार इस जन पंजाब क्षेत्र में व्यास नदी घाटी के क्षेत्र में अस्तित्व में रहा था, परंतु कुषाण शक्ति के बढ़ते प्रभाव के कारण इन्हें दक्षिणी क्षेत्रों में दृषद्वती नदी घाटी की ओरविस्थापित होना पड़ा तथा अंततः इन का विलय शताब्दी के आसपास कुषाण साम्राज्य में हो गया।[35] प्रथम शताब्दी ईस्वी पूर्व व पाकिस्तान के बहावलपुर से प्राप्त कनिष्क का एक अभिलेख इस क्षत्र पर किसानों के अधिपत्य की पुष्टि करता है।[36] सर ओरेल स्टीन द्वारा भी सूरतगढ़ व इसके निकटवर्ती क्षेत्रों से कुषाण शासकों के सिक्के एवम उत्तरवर्ती कुषाणकालीन मूर्तियां प्रतिवेदित की गई।[37] सूरतगढ़ तहसील में स्थित रंगमहल पुरास्थल के उत्खनन से प्राप्त कनिष्क प्रथम, वासिष्क, वासुदेवप्रथम के सिक्के इस क्षेत्र पर कुषाणों के आधिपत्य को प्रमाणित करते हैं।[38] कुषाणों की सत्ता कमजोर पड़ने के बाद इस क्षेत्रमें अस्थिरता व्याप्त हो गई। संभवतः कुषाणों की सत्ता को यौधेयों ने उखाड़ फेंका अपनी सत्ता स्थापित की। रुद्रदामन का 150 ईस्वी गिरनार अभिलेख में भी इस क्षेत्र में यौधेयों की उपस्थिति को प्रमाणित करता है। रुद्रदामन द्वारा इस गण को परास्त करके अपना अधीन बना लिया गया था।[39] परंतु पश्चिमी क्षत्रपों की सत्ता का पराभाव होते ही इस क्षेत्र परसंभवत उत्तरी कुषाण शासकों की शाखा (जिन्हें मुरुंड अथवा किदार कुषाण भी कहा जाता है) का शासन स्थापित हो गया। रंगमहल के उत्खनन[40] व वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान 48 जी.बी.(रेड) नामक परास्थल से इन शासकों के सिक्के पाए गए हैं। तृतीय सदी ईस्वी के आसपास इस क्षेत्र में यौधेय पुनः शक्तिशाली हो गए तथा इन्होंने गुप्तों के आगमन

ऐतिहासिककालीन मृद्भांड (रंगमहल संस्कृति)

तक (संभवतःसमुद्रगुप्त तक) इस क्षेत्र पर शासन किया। गुप्त काल के दौरान समुद्रगुप्त द्वारा इस क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित किए जाने का साक्ष्य प्राप्त होते हैं। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में यौधेयों का वर्णन मिलता है, जिन्हें अपने उत्तरापथ अभियान के दौरान समुद्रगुप्त ने पराजित किया तथा उन्हें अपना करद बना लिया था।[41] इसके अतिरिक्त बीकानेर के डलिया नामक स्थल से प्राप्त एक गुप्तकालीन मुहर जिस पर *'श्री समेकाजिका कुमारात्यधीकरणस्य'* लेख अंकित है, जो यह प्रमाणित करता है कि यह क्षेत्र गुप्तकालीन शासकों की एक प्रशासनिक इकाई था।[41]इसके अतिरिक्त बड़ोपल ,मुंडा सुल्तान की *थेड़ी* (जिला हनुमानगढ़), रंगमहल (जिला श्रीगंगानगर) से प्राप्त उत्तरगुप्तकालीन पकी मिट्टी के फलकों की प्राप्ति क्षेत्र में गुप्तों के प्रभाव के सूचक हैं।[42] स्कंदगुप्त के भीतरी अभिलेख में गुप्तों काहूणों के साथ संघर्ष का वर्णन मिलता है, जिन्हें पराजित करने के बाद गुप्तों ने गुजरात में काठियावाड़,मालवा व राजस्थान के क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित किया था।[43] हनुमानगढ़ जिले के पांडुसर से प्राप्त हूणों का एक सिक्का भी इस क्षेत्र मे उनकी उपस्थिति दर्ज कराता है।[44] उत्तरी राजस्थान में आरंभिक ऐतिहासिक काल के दौरान रंगमहल संस्कृति का उद्भव वर्तमान अध्ययन क्षेत्र की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विशिष्टता है। जिला श्रीगंगानगर की सूरतगढ़ तहसील में स्थित रंगमहल नामक पुरास्थल के उत्खनन से इस संस्कृति के ऐतिहासिक कालानुक्रम व अन्य पक्षों के विषय में जानकारी प्रकाश म आई हैं। इस उत्खनन से प्राप्त स्तरीकृत प्रमाणों के आधार पर रंगमहल संस्कृति का समय काल लगभग द्वितीय शताब्दी ईस्वी से लेकर छठी शताब्दी ईस्वी तक निर्धारित किया गया है।[45] लाल रंग के सुदृढ़ पात्र जिन पर काले रंग मे वनस्पतिक व जीव जंतु इत्यादि के अलंकरण प्रचुरता में बनाए गए हैं, इस संस्कृति की मुख्य विशेषता है। रंगमहल उत्खनन से इन मृदभांडों से संबद्ध सांस्कृतिक स्तर से प्राप्त कुषाण एवम् उनके अनुवर्ती शासकों के सिक्कों के आधार पर इस संस्कृति को कुषाण एवम उत्तरवर्त्ती शासकों से संबंधित बताया गया है।[46] यह संस्कृति लगभग छठी शताब्दी ईस्वी तक अस्तित्व में रही तथा उत्तर भारत में संभवत हर्षवर्धन वंश के समयकाल तक इसका पतन हो गया।

पूर्व मध्यकाल

छठी शताब्दी ईस्वी में यह क्षेत्र संभवत पुष्यभूति शासकों के प्रभाव में रहा।[47] परंतु हर्ष की मृत्यु के बाद शीघ्र ही संपूर्ण उत्तर भारत में अराजकता फैल गई और पुष्यभूति साम्राज्य के खंडहरों पर कई क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। तदुपरांत यह क्षेत्र कन्नौज के शासक यशोवर्मन के प्रभाव में रहा। राजतरंगिणी से इस क्षेत्र पर ललितादित्य मुक्तापीड़ द्वारा यशोवर्मन के राज्य पर आधिकार किए जाने का प्रमाण हो प्राप्त होता है।[48] इसके बाद पूर्व मध्यकाल में गुर्जर–प्रतिहार विशेषतः, राजस्थान व मालवा के क्षेत्र में उदित हुई महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति थी। गुर्जर–प्रतिहार शासकों ने पूर्व मध्य काल के दौरान उत्तर भारत में कन्नौज पर आधिपत्य हेतु हुए त्रिपक्षीय संघर्ष में राष्ट्रकूट व पालों का सफल प्रतिरोध करते हुए विभिन्न अवसरों पर कन्नौज पर सत्ता स्थापित करने में सफलता पाई। इस दौरान गुर्जर–प्रतिहार साम्राज्य का विस्तार गुजरात, काठियावाड़, मालवा व सतलुज के क्षेत्रों तक फैला हुआ था। इसी क्रम में बीकानेर राज्य में गंगानगर के कुछ क्षेत्रों पर इनका अधिकार रहा होगा।[49] ग्वालियर प्रशस्ति से प्रतिहारों के मत्स्य व उत्तर पश्चिमी राजस्थान के क्षेत्रों पर आधिपत्य के उल्लेख प्राप्त होता हैं।[50] गुर्जर–प्रतिहारों के उपरांत आठवीं शताब्दी ईस्वी में इस क्षेत्र पर शाकंभरी क चौहानों का शासन कायम हुआ। शाकंभरी को केंद्र बनाते हुए इन्होंने बीकानेर से लेकर दक्षिण पूर्वी पंजाब व मारवाड़ के इलाकों पर प्रभुत्व जमा लिया। हनुमानगढ़ के पास भटनेर से प्राप्त अजयराज का एक सिक्का क्षेत्र में चौहान अधिपत्य का प्रमाण प्रस्तुत करता है,[51]परंतु उत्तर पश्चिमी भारत में 10 वीं शताब्दी में चौहानों की पकड़ कुछ समय तक ढीली पड़ गई। जिसका लाभ उठाते हुए यहां भट्टी राजपूतों ने अपनी सत्ता स्थापित कर ली। 1004 ईस्वी में महमूद गजनवी के आक्रमण के कारण भट्टी राजपूतों की सत्ता का पराभाव हो

गया व अजमेर के चौहानो ने इस क्षेत्र पर आधिपत्य जमा लिया।[52] जिला हनुमानगढ़ के पांडुसर व पल्लू से राजपूत शासक चौहान अनुराज की पत्नी सोमलदेवी द्वारा जारी किए गए 70 से भी अधिक सिक्के इस क्षेत्र में चौहानों के पुनः अधिकार हो जाने की प्रतिपुष्टि करते हैं।[53] पृथ्वीराज तृतीय चौहान साम्राज्य का सर्वप्रसिद्ध व शक्तिशाली शासक था। जिसका साम्राज्य वर्तमान अंबाला (हरियाणा), पंजाब के पटियाला नाभा फरीदकोट, हिमाचल के कुछ हिस्सों व राजस्थान के जयपुर अलवर बीकानेर से लेकर दक्षिण राजस्थान में गुजरात की सीमा तक तथा मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती इलाकों जैसे झांसी,आगरा ग्वालियर से लेकर पाकिस्तान के बहावलपुर प्रांत तक विस्तृत था।[54] 1192 ई. मे तराइन के दूसरे युद्ध में पृथ्वीराज तृतीय के हार जाने पर चौहानों की सत्ता का पतन हो गया तथा इस क्षेत्र पर पुनः भट्टी राजपूतों का कब्जा हो गया।[55] दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद संभवत इन राजपूत सरदारों ने तुर्क शासकों के आधिपत्य स्वीकार कर ली परंतु मौका मिलते ही ये क्षेत्रीय सरदार बगावत कर देते थे और स्वयं को स्वतंत्र शासकों के रूप में स्थापित करने का यह उतार–चढ़ाव भरा क्रम कालांतर में मुगलों के आने के बाद भी जारी रहा।

संदर्भ

1. संत, उर्मिला, टी. जे. बैद्य व अन्य बारोर– ए न्यू हडप्पन साइट इन घग्गर वैली, ए. प्रिलिमनरी रिपोर्टः *पुरातत्व,* वॉ०–35, इंडियन आर्कियोलॉजी सोसायटी, नई दिल्ली, 2004–05, पृ. 60–551

2. दलाल, के.टी फिरोज, बिन्जोर । ए– प्री हड़प्पन साइट ऑन द इंडो–पाक बॉर्डर, बी. एम. पांडे, बी. डी. चट्टोप्पाध्याय (संपा.) *आर्कियोलॉजी एंड हिस्ट्रीः ऐस्सेज इन मेमोरी ऑफ ए. घोष, वॉ०–*1. पृ. 77–111

3. लाल, बी. बी. बी. के. थापर व अन्य,*एक्सक्वेशन्स एट कालीबंगाः द अर्ली हडप्पनस* (1961–69), आर्कियोलॉजी सर्वे ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, पृ. 25–32

4. निगम, जे. एस. सोथी पॉटरी एट कालीबंगा ए रि अप्रैजल *पुरातत्व,* वॉ० 26, इंडियन आर्कियोलॉजी सोसायटी, नई दिल्ली 1996, पृ. 7–23

5. उत्खन्नकर्ता डा० अमर सिंह से प्राप्त व्यक्तिगत जानकारी

6. विकास, *आर्कियोलॉजिकल सेंटलमेंट पैटर्न ऑफ हनुमानगढ़ डिस्ट्रिक्ट राजस्थान,* अप्रकाशित शोध–ग्रंथ, म. द. वि. रोहतक, 2012, पृ. 71

7. संत, उर्मिला, टी. जे. वैद्य व अन्य, *पूर्वोक्त,* पृ. 50–551

8. फ्रंटलाइन (पत्रिका), अंक जून 2015, पृ. 67–79

9. लाल, बी. बी. जगतपति जोशी व अन्य, *पूर्वोक्त,* पृ. 21

10. संत, उर्मिला, टी. जे. वैद्य व अन्य, *पूर्वोक्त,* पृ. 50–55।

11. वही

12. फ्रंटलाइन (पत्रिका), अंक जून 2015, पृ. 67–85

13. लाल, बी. बी., व अन्य, *पूर्वोक्त,* पृ. 95–98

14. फ्रंटलाइन (पत्रिका), अंक जून 2015, पृ. 78

15. वही, पृ. 67–85

16. त्रिवेदी, पी. के., जे. के. पटनायक, 'एक्सक्वेशन्स एट तरखानवाला डेरा एंड चक 86 (2003–2004), *पुरातत्व,* वॉ०–34, पृ. 30–34

17. फ्रंटलाइन (पत्रिका), अंक जून 2015, पृ. 67–85

18. समुन्दर, विवेक दांगी, 'एक्सप्लोरेशन्स अलांग, ''लास्ट'' रिवर सरस्वती (सूरतगढ़ तहसील, श्री गंगानगर जिला, राजस्थान) *हैरिटेज,* 2014, पृ. 783–801

19. त्रिवेदी, पी. के. जे. के. पटनायक, *पूर्वोक्त,* पृ. 30–34

20. *डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स,* श्रीगंगानगर, 1972, पृ. 29

21. ओझा, जी. एच., *अर्ली हिस्ट्री आफ राजपूताना,* वॉ.1,वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1937, पृ. 02

22. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, श्रीगंगानगर, 1972. पृ. 30

23. बोधि, भिक्खु, (अनु.) (अंगुत्तर निकाय), *द न्यूमेरिकल डिस्कॉर्स ऑफ बुद्धा,* विज्डम पब्लिके"ान, बोस्टन, 2012, पृ. 300

24. उपाध्याय, वासुदेव, भारतीय सिक्के,लीडर प्रैस, प्रयाग, 1947, पृ. 80

25. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, श्रीगंगानगर, 1972, पृ. 31

26. वही

27. विकास, पूवोक्त, पृ. 281–282, हांडा, देवेंद्र, *स्टडीज इन इंडियन क्वायन्स एंड सील्स,*संदीप प्रका"ान,नई दिल्ली, पृ. 26–27

28. बसाक, आर. जी., *अशोकन इन्सक्रिप्शन्स,* प्रोग्रेसिव पब्लि"ार्स, कलकत्ता, 1959, पृ. 133

29. हरियाणा गजेटियर्स, 2001, पृ. 186

30. वही

31. राजस्थान स्टेट गजेटियर्स, वॉ०–1, 1995, पृ. 18

32. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, श्रीगंगानगर, 1972, पृ. 31

33. इंडियन आर्कियोलाजी 1972–73, ए रिव्यू पृ. 61–62

34. वही

35. हांडा देवेंद्र, पूर्वोक्त, पृ. 140

36. वही

37. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, श्रीगंगानगर, 1972, पृ. 31

38. स्टाइन, ऑरेल, एन आर्कियोलॉजिकल टूअर अलांग द लॉस्ट रिवर सरस्वती, एस. पी. गुप्ता (संपा.) एन आर्कियोलॉजिकल टूअर अलांग द घग्गर–हांकड़ा रिवर, कुसुमांजली प्रका"ान, मेरठ,1989, पृ. 25–26

39. हन्ना रिढ, रंगमहल : द स्वीडिश आर्कियोलॉजिकल एक्सपीडिशन टू इंडिया (1952–54), द न्यू बुक कंपनी, मुम्बई,1959, पृ. 172–173

40. गोएट्ज, हरमन, आर्ट एंड आर्किटेक्चर ऑफ बीकानेर स्टेट,ब्रूनो कास्सरेर ऑक्सफोर्ड,लंदन,1950, पृ. 28

41. हन्ना रिढ, पूर्वोक्त, पृ. 172–17

42. मजूमदार, आर. सी. व अन्य (संपा.) द ऐज ऑफ इंपिरियल यूनिटी, वॉ.–2, भारतीय विद्या भवन,मुम्बई, 1997, पृ. 160

43. विकास, पूर्वोक्त, पृ. 304

44. फ्लीट, जॉन फेथफुल, कॉर्पस इंसक्रिप्शनम इंडिकेरम, वॉ०–3, सुपरिन्टेंडेंट ऑफ गवर्नमेंट प्रिटिंग इंडिया,कलकत्ता, 1888, पृ. 129–136

45. हांडा देवेंद्र, पूर्वोक्त, 1985, पृ. 26–27

46. हन्ना रिढ, पूर्वोक्त, पृ. 181

47. वही, पृ. 171–17

48. *डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स,* श्रीगंगानगर, पृ. 33, ओझा, जी. एच., *पूर्वोक्त,* पृ. 226–27

49. *राजतंरिगिणी,* 4.172

50. *डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स,* श्रीगंगानगर, 1972, पृ. 33

51. ओझा, जी. एच., *पूर्वोक्त,* पृ. 176–181

52. वही, पृ. 70–71

53. *डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स,* श्रीगंगानगर, 1972, पृ. 34

54. हांडा, देवेंद्र, *पूर्वोक्त,* पृ. 146–153

55. चौहान, आर. बी., *द हिस्ट्री ऑफ चाहमानस,* 1964, पृ. 182

56. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, श्रीगंगानगर, नंदकि"ाोर एंड सन्स, वाराणासी, 1972, पृ. 34